(एकालाप)

30/04/2020

मनुष्य अपने आंतरिक भावों या विचारों के संप्रेषण हेतु भाषा का प्रयोग करता है। कोई भी संप्रेषण तभी सफल हो सकता है जब उसमें संवाद हो। और संवाद दो प्रकार से संभव है - एक तो जब कोई वक्ता अकेले ही संबोधक के रूप में अपनी बात कहता है, कोई दूसरा उसके उत्तर में कुछ नहीं कहता। दूसरा रूप जिसमें एक से अधिक वक्ता एवं श्रोता आपस में बातचीत करके किसी सम्प्रेषण को ग्रहण करें। इसी आधार पर वक्ता-श्रोता की दृष्टि से संवाद के दो मुख्य रूप कहे जा सकते हैं - एकालाप और संवाद।

अकेले व्यक्ति द्वारा अपने आप से की गई बात एकालाप कहलाती है। और संवाद से तात्पर्य है - एक से अधिक व्यक्तियों की आपसी बातचीत।

एकालाप वे हैं जो मंच पर किसी को सुना सुनाए नहीं जाते उसमें एक वक्ता होता है। उसके लिए कोई नियम नहीं होते। एकालाप प्रायः संक्षिप्त ही होते हैं।

(संवाद) :- संवाद शब्द से अभिप्राय है अच्छी तरह से परस्पर बातचीत करना। यह 'संलाप' का पर्याय है। इसमें दो पक्ष आवश्यक हैं - 'एक संबोधक दूसरा संबोधी'। दोनों पक्ष प्रत्यक्ष रूप से अलग-२ अस्तित्व रखते हैं। दोनों की भूमिकाएं बदलती रहती है। वक्ता श्रोता से कुछ कहता है जिसका उत्तर देते समय वक्ता और श्रोता की भूमिकाएं बदल जाती है अर्थात वक्ता-श्रोता और श्रोता-वक्ता बन जाता है। जैसे -

राजन - जी नमस्ते!

पिता - खुश रहो बेटे! मैं ये क्या सुन रहा हूं

राजन - क्या पिताजी?

Teacher's Signature :

(9) पूर्णमूल्यांकन समीक्षा (10) आत्म समीक्षा।

[द्रुतवाचन] most important

'वाचन' का अर्थ है पढ़ना तथा समझना। द्रुतवाचन का अर्थ शीघ्रता से पढ़कर समझना। पाठ्यक्रमों में द्रुतवाचन की व्यवस्था करने का उद्देश्य यही होता है कि विद्यार्थी किसी भी लिखित या मुद्रित (छपी) सामग्री को शीघ्रता से पढ़कर उसका अर्थ या भाव समझ सके। द्रुतवाचन मौन या सस्वर दोनों रूपों में किया जाता है। द्रुतवाचन किसी भी प्रकार की पुस्तकों का हो सकता है। विषय कोई भी हो चाहे विधा कोई भी, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध हो सकती है।

अतः कह सकते हैं कि कुछ ऐसे पाठ जिनमें भाषा की कठिनाई नहीं होती। वे सरल भाषा में सरल घटना क्रम में और सहज होते हैं। ऐसे पाठों का ही द्रुतवाचन होता है। द्रुतवाचन में सोपान-क्रम उस प्रकार होता है -

(i) पूर्वज्ञान (ii) प्रस्तावना (iii) पाठ की घोषणा (iv) पठन के लिए (हेतु) कथन (v) पठन-कार्य - द्रुत गति से (vi) वस्तु-विश्लेषण - अर्थ ग्रहण (vii) समाहार (viii) मूल्यांकन